

डॉ. नट हेम, नीतिवचन, व्याख्यान 9, समृद्धि सुसमाचार भाग 2

© 2024 नॉट हेम और टेड हिल्डेब्रांट

यह नीतिवचन की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. नट हेम हैं। यह सत्र संख्या नौ है, नीतिवचन में समृद्धि सुसमाचार, भाग दो।

पाठ नौ में आपका स्वागत है। हम नीतिवचन की पुस्तक में समृद्धि की खोज जारी रख रहे हैं। यहां अब, हम विशेष रूप से इस व्याख्यान की शुरुआत में एक ओर धन के अधिग्रहण और दूसरी ओर उस धन से जुड़ी सामाजिक जिम्मेदारी के बीच संबंध पर गौर करेंगे। तो यह इस व्याख्यान का मुख्य विषय है।

सबसे पहले, हम धन के अधिग्रहण को देखते हैं। और यहां हमारे पास अमीर बनने और जीवन में वित्तीय रूप से अच्छा प्रदर्शन करने के बारे में व्यावहारिक सलाह के बारे में कई कथन हैं। और इसमें से अधिकांश व्यावहारिक, व्यावहारिक आर्थिक ज्ञान है।

अक्सर यह किसी भी धार्मिक मूल्यों से विशेष रूप से जुड़ा नहीं होता है। कभी-कभी ऐसा होता है, लेकिन इसका अधिकतर संबंध इस बात से होता है कि आप व्यावहारिक रूप से अच्छा प्रदर्शन कैसे करते हैं। फिर भी, ऐसे कई कथन हैं, और मैं अब उनमें से कुछ के साथ शुरुआत करूंगा, सामान्य प्रकृति के जो इस बात पर जोर देते हैं कि दीर्घकालिक रूप से उदारता को पुरस्कृत किया जाएगा, जबकि दीर्घकालिक रूप से क्रूरता को दंडित किया जाएगा।

निम्नलिखित अनुभाग विशेष रूप से शिक्षाप्रद है, खासकर जब व्यक्तिगत कथावतों को एक लौकिक समूह के रूप में एक साथ पढ़ा जाता है जहां कई कथावतों एक साथ अलग-अलग हिस्सों के योग से अधिक अर्थ रखती हैं। और मैं अब यहां अध्याय 11 से पढ़ने जा रहा हूं, और मैंने श्लोक 16 से श्लोक 20 तक का पूरा खंड एक ही बार में पढ़ा है। और मैं आपको मेरे साथ पढ़ने और जब मैं इसे पढ़ता हूं तो मेरे साथ सोचने के लिए आमंत्रित करता हूं।

दयालु स्त्री आदर पाती है, परन्तु जो सद्गुण से घृणा करती है, वह लज्जा से ढकी रहती है। डरपोक तो कंगाल हो जाते हैं, परन्तु आक्रामक लोग धन प्राप्त करते हैं। जो दयालु हैं वे अपने आप को प्रतिफल देते हैं, परन्तु क्रूर लोग अपनी ही हानि करते हैं।

दुष्टों को कुछ लाभ नहीं होता, परन्तु जो धर्म के बीज बोते हैं, उन्हें सच्चा प्रतिफल मिलता है। जो कोई धर्म पर स्थिर रहता है वह जीवित रहेगा, परन्तु जो बुराई का पीछा करता है वह मर जाएगा। कुटिल मनो से यहोवा को घृणा आती है, परन्तु वह निष्कलंक मनवालों से प्रसन्न होता है।

अब यहां व्यावसायिक व्यवहार, आर्थिक जुड़ाव या यहां तक कि व्यावहारिक कार्य के बारे में कुछ भी नहीं है। इसका संबंध चरित्र, दृष्टिकोण, सद्गुणों से अधिक है। यहां विभिन्न लोग दूसरों के

साथ कैसे जुड़ते हैं? जो लोग अपने लिए कुछ पाने के लिए स्वार्थी हैं वे अंततः सामान्य अर्थों में गरीब हो जाएंगे।

जो लोग उदार हैं और धर्म का बीजारोपण करते हैं, जो दूसरों का कल्याण करना चाहते हैं, वे अंततः स्वयं ही लाभान्वित होंगे। इसे जीवन के सभी क्षेत्रों, आर्थिक व्यवहार और इनके बीच की किसी भी चीज़, सभी मानवीय अंतःक्रियाओं पर लागू किया जा सकता है। यहाँ दूसरों के प्रति उदारता के बारे में कुछ है।

निम्नलिखित क्लस्टर उदारता से भी संबंधित है और इसमें जो वर्णित किया जा रहा है उसके नैतिक मूल्यांकन के लिए नैतिक निहितार्थ भी शामिल हैं। फिर से, मैंने अध्याय 11 से श्लोक 23 से अध्याय 26 तक पढ़ा। धर्म की इच्छा केवल भलाई में समाप्त होती है, दुष्टों की आशा क्रोध में समाप्त होती है।

कुछ लोग मुफ्त में दान करते हैं, फिर भी और अधिक धनवान हो जाते हैं। अन्य लोग जो देय है उसे रोक लेते हैं और केवल अभाव सहते हैं। उदार मनुष्य धनी हो जाएगा, और जो पानी देगा उसे पानी मिलेगा।

लोग अन्न को रोक रखनेवालों को शाप देते हैं, परन्तु बेचनेवालोंके सिर पर आशीष होती है। इनमें से कम से कम एक श्लोक निश्चित रूप से समृद्धि-प्रकार की शिक्षा में अक्सर उपयोग किया गया है, अर्थात् श्लोक 24। कुछ लोग स्वतंत्र रूप से देते हैं, फिर भी और अधिक अमीर हो जाते हैं।

अन्य लोग जो देय है उसे रोक लेते हैं और केवल अभाव सहते हैं। अब ईमानदार होने के लिए, एक सामान्य कथन के रूप में, मैं इस कथन के अनुप्रयोग को पूरी तरह से दोष नहीं दे सकता। हालाँकि, यह समस्याग्रस्त हो जाता है, जब लोग इसे कार्य-परिणाम गठजोड़ या कनेक्शन में बनाते हैं, जहां यह हमेशा ऐसा ही रहेगा, और हम बाद में इस पर वापस आएं।

निःसंदेह एक और सवाल यह है कि देय राशि को रोकने से इसका क्या लेना-देना है? कहावत में यह स्पष्ट नहीं है, लेकिन यह संभव है कि हम यहां जो व्यवहार कर रहे हैं वह भिक्षा देना या प्रसाद देना नहीं है, चाहे वह किसी कमजोर व्यक्ति को हो या वह धार्मिक गतिविधि हो, जैसे कि प्राचीन इज़राइल में मंदिर या आधुनिक दुनिया में एक इंजीलवादी या अन्य प्रकार की ईसाई दान मंत्रालय जैसी चीज़, लेकिन जो देय है वह वास्तव में आर्थिक आदान-प्रदान से संबंधित हो सकता है। और जिस व्यक्ति से किसी चीज़ के लिए कीमत चुकाने के लिए कहा जाता है, वह न केवल उस न्यूनतम कीमत का भुगतान करेगा जिससे वह बच सकता है, बल्कि वह जो खरीद रहा है उसके लिए एक उचित मूल्य, एक उदार, उचित कीमत का भुगतान करेगा। एक और लौकिक समूह, जो बहुत दिलचस्प है, आलस्य, दुष्टता और धार्मिक पाखंड को जोड़ता है।

यह अध्याय 1, श्लोक 25 से 27 है। आलसी व्यक्ति की लालसा घातक है, क्योंकि आलसी हाथ श्रम करने से इनकार करते हैं। दुष्ट तो दिन भर लालच करते हैं, परन्तु धर्म दान देने से पीछे नहीं हटते।

दुष्टों का बलिदान घृणित है। बुरे इरादे से लाये जाने पर और कितना? अब, कोई यह तर्क कर सकता है कि क्या ये केवल तीन असंबंधित कहावतें हैं जो तीन अलग-अलग चीजों के बारे में बात करती हैं? मैं तर्क दूंगा कि न केवल अप्रत्यक्ष अनुक्रम, 25, 26, 27 हैं, बल्कि इन तीन कथनों के बीच एक वैचारिक संबंध भी है। इसमें आलसी व्यक्ति की इच्छा शामिल होती है, जो कोई काम न करने के कारण घातक रूप से समाप्त हो जाती है।

यद्यपि व्यक्ति कुछ चाहता है, और जितना उनके पास है उससे अधिक चाहता है, वे इसके लिए काम करने को तैयार नहीं हैं, श्लोक 25 में। श्लोक 26 में, लालसा और इच्छा भी शामिल है। इस मामले में, यह दुष्ट की इच्छा है, जो दिन भर लालच करता है।

इसकी तुलना धर्मी लोगों से की जाती है, जो उनके पास जो कुछ है उसे उदारतापूर्वक देते हैं, बजाय इसके कि उनके पास जितना है उससे अधिक की इच्छा रखते हैं। और उनकी तुलना न केवल श्लोक 26 में दुष्टों से की जाती है, बल्कि श्लोक 25 में आलसी से भी की जाती है। और फिर, यह श्लोक 27 से जुड़ता है, जहां दुष्ट फिर से फोकस में हैं, जैसा श्लोक 26 में है, जहां तब भी दुष्ट लोग कुछ देते हैं, क्योंकि यही बलिदान है, यह एक उदार, माना जाता है कि उदार दान है, इस मामले में यह मंदिर को दिया जाता है, लेकिन फिर भी जब वे सही तरह का काम करते हैं, तो इसे घृणित माना जाता है, संभवतः, ईश्वर इससे घृणा करता है, हालाँकि वे सही धार्मिक गतिविधि कर रहे हैं, क्योंकि वे इसे बुरे इरादे से लाते हैं।

और यहां, मुझे लगता है कि हमें भ्रमित ईसाइयों के लिए एक गंभीर चेतावनी की आवश्यकता है, जो सोचते हैं कि भगवान को उदार दान, अगर यह बुरे इरादे से किया जाता है, तो उन्हें वांछित परिणाम मिलेगा, अर्थात् भगवान का आशीर्वाद, भले ही वे अब सोचते हों, ओह, मुझे अब और काम करने की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि मैं उदारता से दे रहा हूँ, इसलिए प्रभु अब मेरा कर्जदार है, और मुझे वापस देगा। इन तीन छंदों के संदर्भ में, यदि आप एक ईसाई के रूप में केवल भगवान को देते हैं क्योंकि आप उससे अधिक वापस प्राप्त करना चाहते हैं, तो मुझे ऐसा लगता है कि नीतिवचन 31, 27 के अनुसार, यह एक दुष्ट बलिदान है, क्योंकि आप इसे ला रहे हैं एक बुरे, स्वार्थी इरादे से। आप इसे भगवान को प्रसन्न करने के लिए नहीं ला रहे हैं, आप इसे अन्य लोगों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए नहीं ला रहे हैं, आप इसे अपने जीवन को बेहतर बनाने के लिए ला रहे हैं।

आप सोचते हैं कि आपको बिना मेहनत किए कुछ मिल सकता है। ये तीन श्लोक मिलकर आपकी स्थिति के बारे में यही कह रहे होंगे। दूसरा उदाहरण, 22 श्लोक 9, जो उदार हैं वे धन्य हैं, क्योंकि वे अपनी रोटी गरीबों में बाँटते हैं।

और मैं इसे विशेष रूप से उस दृष्टिकोण के साथ तुलना करना चाहता हूँ जिसका मैंने अभी वर्णन किया है, अर्थात्, यहां उदार लोगों का दान धन्य है, क्योंकि वे अपने लिए कुछ चाहते हैं, इसलिए धन्य नहीं है, बल्कि विशेष रूप से, एक प्रेरणा है, एक प्रेरणा है यहाँ स्पष्टीकरण, श्लोक के दूसरे भाग में, जो कहता है, क्योंकि वे अपनी रोटी गरीबों के साथ बाँटते हैं। यहां उदारता अपने लिए कुछ पाने के लिए नहीं, बल्कि दूसरों को लाभ पहुंचाने के लिए है। और फिर उससे स्वाभाविक रूप से आशीर्वाद प्राप्त होता है।

तो, प्रश्न वास्तव में प्रेरणा से संबंधित है। लेकिन साथ ही, इसका इस तथ्य से भी लेना-देना है कि उदारता वास्तव में दूसरों को फायदा पहुंचाने के लिए बनाई गई है, न कि खुद को। इसके साथ एक सामाजिक घटक और एक सामुदायिक घटक जुड़ा हुआ है।

अब मैं नीतिवचन की पुस्तक में समृद्धि पर शिक्षा के एक और बहुत ही प्रमुख पहलू की ओर मुड़ता हूँ, अर्थात् यह तथ्य कि ऐसी कई कहावतें हैं जो कहती हैं कि जल्दी अमीर बनो योजनाएं बेकार हैं। वे व्यर्थ हैं। वे तुम्हें कहीं नहीं ले जायेंगे।

और मैं अभी भी इन्हें प्रस्तुत कर रहा हूँ, और जो बयान मैं पहले ही दे चुका हूँ, व्यापक संदर्भ में, सबसे पहले, कोई व्यक्ति वास्तव में अमीर कैसे बनता है? व्यावहारिक रूप से सच्ची समृद्धि कैसे प्राप्त होती है? और फिर इससे भी व्यापक संदर्भ में, लंबे समय में धन का अधिग्रहण, सच्ची संपत्ति का अधिग्रहण, दूसरों को लाभ पहुंचाने के दायित्व से कैसे जुड़ा है? हम अभी-अभी इस पर थोड़ा विचार कर चुके हैं। लेकिन बाद में और भी बहुत कुछ होगा। अभी के लिए, आइए इस बात पर ध्यान दें कि हम धन कैसे अर्जित करते हैं। हम वास्तव में समृद्ध कैसे बनें? यह खंड अब इस तथ्य पर व्यावहारिक सलाह देता है कि इसे कैसे नहीं करना चाहिए, जो निस्संदेह, हमें यह समझने में बेहतर मदद करता है कि इसका सकारात्मक पहलू क्या है और इसके बारे में जाने का सही तरीका कैसा है।

तो अब हम शुरू करें। शीघ्र-अमीर बनने की योजनाएँ व्यर्थ हैं। और इसे समझने में हमारी मदद के लिए मैं यहां कुछ श्लोक दूंगा।

अध्याय 19, श्लोक 2. ज्ञान के बिना इच्छा अच्छी नहीं होती, और जो उतावली करता है वह मार्ग से चूक जाता है। फिर, इस बारे में और भी बहुत कुछ कहा जा सकता है। 2021, शुरुआत में जल्दी से हासिल की गई संपत्ति अंत में धन्य नहीं होगी।

अध्याय 21, श्लोक 5. मेहनती लोगों की योजनाएँ निश्चित रूप से समृद्धि की ओर ले जाती हैं। परन्तु जो कोई उतावली करता है वह केवल चाहने के लिये ही आता है। अध्याय 23, श्लोक 4. अमीर बनने के लिए अपने आप को थकाओ मत।

परहेज करने के लिए पर्याप्त बुद्धिमान बनें। पद 5. जब तुम्हारी दृष्टि उस पर पड़ती है, तो वह नष्ट हो जाता है। क्योंकि अचानक वह अपने पंख लगा लेता है, और उकाब की तरह स्वर्ग की ओर उड़ जाता है।

और यहां एक गंभीर अनुस्मारक है कि तब और अब और दुनिया भर में ऐसे कई लोग हैं जो अमीर बनने और जल्दी अमीर बनने की बेताब कोशिश कर रहे हैं और वे खुद को थका देते हैं। और वे किसी भी चीज़ से पहले इस बात पर ध्यान देते हैं कि अमीर कैसे बनें। अक्सर उनके रिश्ते पीड़ित होते हैं, उनके परिवार पीड़ित होते हैं, उनके कर्मचारी पीड़ित होते हैं, उनके व्यावसायिक साझेदार पीड़ित होते हैं, और अंततः वे स्वयं पीड़ित होते हैं।

और यह कहावत अपने यथार्थवाद में गंभीर है। आपको यह सारी संपत्ति और जो कुछ भी मिल सकती है, लेकिन जब आप वास्तव में इसे देखते हैं, तो वास्तव में यह आपके पास होते ही गायब हो जाती है। क्योंकि अचानक वह अपने पंख लगा लेता है, और उकाब की तरह स्वर्ग की ओर उड़ जाता है।

जिसका मतलब यह हो सकता है कि यह किसी खराब व्यावसायिक उद्यम में या किसी बाहरी आर्थिक संकट के कारण या कानून में बदलाव या प्रौद्योगिकी में बदलाव या जो भी हो, के कारण जल्दी ही खो सकता है। लेकिन फिर भी यह हो सकता है कि आपके पास वह धन हो और आप अचानक सोचें कि यह इसके लायक नहीं था। यह मुझे बिल्कुल भी वह नहीं दे रहा जो मैं चाहता था।

यह वही है जो मैं वास्तव में चाहता था वह स्वर्ग में उड़ गया है और अब मेरी पहुंच से बाहर है। तो, वह सब यहां चल सकता है। फिर अध्याय 28 श्लोक 20।

विश्वासयोग्य लोगों को आशीषें बहुतायत से मिलेंगी, परन्तु जो धनी बनने की उतावली करता है, वह दण्ड से बचा नहीं रहेगा। फिर, इस तथ्य का लगातार ढोल पीटना कि जल्दी अमीर बनो योजनाएँ काम नहीं करने वाली हैं, कोई लाभ नहीं देने वाली हैं और ये इसके लायक नहीं हैं। या तो आपके पास धन होने पर भी आपको पहली बार में संतुष्टि नहीं मिलेगी।

और दूसरी बात, इसके नैतिक परिणाम हैं, सामाजिक परिणाम हैं, धार्मिक परिणाम हैं। और अंततः आप यह सब कुछ भी खो सकते हैं। फिर कहावतों का एक और संबंधित अनुभाग है, कहावतों का एक समूह जिसका मैं संक्षेप में उल्लेख करना चाहता हूँ।

और भी बहुत कुछ हैं लेकिन मैं उनमें से केवल कुछ का ही उपयोग करूँगा। वह गलत कमाई भी व्यर्थ है। इसलिए, जल्दी अमीर बनना व्यर्थ है और गलत तरीके से कमाया गया लाभ भी व्यर्थ है।

अध्याय 10 श्लोक 2 और 3। दुष्टता से प्राप्त धन से लाभ नहीं होता, परन्तु धर्म मृत्यु से बचाता है। यहोवा धर्मियों को भूखा नहीं रहने देता, परन्तु दुष्टों की लालसा को टाल देता है। अध्याय 10 श्लोक 14 से 17.

बुद्धिमान ज्ञान को छिपाए रखता है, परन्तु मूर्ख का बकवाद विनाश को निकट लाता है। अमीरों की दौलत उनका गढ़ है, गरीबों की गरीबी उनका विनाश है। धर्मियों की कमाई से जीवन मिलता है, और दुष्ट की कमाई से पाप होता है।

जो कोई शिक्षा को मानता है, वह जीवन के मार्ग पर है, परन्तु जो डांट को अस्वीकार करता है, वह भटक जाता है। पुनः, अध्याय 10 श्लोक 15. धनवानों का धन उनका गढ़ है, गरीबों की गरीबी उनका विनाश है।

यदि हम इसे संदर्भ से हटकर स्वतंत्र रूप से पढ़ते हैं, तो यह केवल तथ्य का बयान हो सकता है। अमीरों के पास गढ़ है, गरीब बर्बाद हैं। और बस यही वास्तविकता है कि चीज़ें कैसी हैं।

लेकिन जब अगले श्लोक में हम सुनते हैं कि धर्मियों की कमाई जीवन की ओर ले जाती है, दुष्टों की कमाई पाप की ओर ले जाती है, तो अमीरों की संपत्ति का गढ़ जीवन की ओर ले जाने वाली धार्मिक जीवन शैली की मजदूरी प्रतीत होती है। दुष्टों के लाभ के विपरीत जो पाप की ओर ले जाता है, एक दुष्ट गरीब व्यक्ति की गरीबी से जुड़ा है जिसका अंत बर्बाद हो जाएगा। इसलिए, दो छंदों को एक साथ पढ़ने से पूरी चीज़ को एक बिल्कुल अलग मोड़ मिलता है।

और आइए इसकी तुलना कहावतों के दूसरे समूह से करें। और मैं अभी इन्हें पढ़ने जा रहा हूँ। अध्याय, मुझे लगता है कि यह अध्याय 11 है।

अध्याय 11 श्लोक 10 और 11. यहोवा का नाम दृढ़ गुम्मत है। धर्मी लोग इसमें भागते हैं और सुरक्षित रहते हैं।

धनवानों का धन ही उनका दृढ़ नगर है। उनकी कल्पना में यह एक ऊंची दीवार की तरह है। या अध्याय 11 श्लोक 28.

जो अपने धन पर भरोसा रखते हैं, वे सूख जाएंगे, परन्तु धर्मी लोग हरी पत्तियों की नाई लहलहा उठेंगे। हमने इसे पहले सुना है, लेकिन आइए अब इसे अन्य छंदों के साथ मिलकर सुनें जो मैं यहां पढ़ रहा हूँ। अध्याय 13, 11.

उतावली से बटोरा हुआ धन घटता जाएगा, परन्तु जो थोड़ा-थोड़ा करके बटोरता है, वह उसे बढ़ाता है। अध्याय 15 श्लोक 27. जो अन्याय के लाभ का लालच करते हैं, वे अपने घराने पर उपद्रव करते हैं, परन्तु जो घूस से घृणा करते हैं, वे जीवित रहेंगे।

एक स्पष्ट धारणा यह उभरती है कि जल्दी-जल्दी अमीर बनने की योजना गलत कमाई से जुड़ी है। इसके बजाय, नीतिवचन की पुस्तक आलस्य के विपरीत मेहनती, ईमानदार और कड़ी मेहनत की सिफारिश करती है, जो या तो गरीबी में समाप्त हो जाएगी या लोगों को लुभावने-जल्दी अमीर बनने की योजनाओं में लुभाएगी जो केवल उनके लक्ष्य तक पहुंच सकती हैं, अर्थात् थोड़े से प्रयास के साथ महान धन। , नैतिक समझौते और अनैतिक व्यवहार के माध्यम से। तो, यहाँ जिस चीज़ को बढ़ावा दिया जा रहा है वह है कर्म के स्थान पर चरित्र और भौतिक लाभ के स्थान पर सच्ची समृद्धि।

अब मैं दृष्टिकोण और व्यवहार के उन उदाहरणों में से एक की ओर मुड़ता हूँ जो मुझे समृद्धि प्राप्त करने से रोकता है। और यह खंड वास्तव में आलस्य से संबंधित है और फिर परिश्रम की चर्चा की ओर ले जाता है। नीतिवचन की किताब बहुत स्पष्ट है।

आलस्य विनाश की ओर ले जाता है। मैं आपको पुस्तक में आलस्य से जुड़ी मजबूत भावनाओं का स्वाद देने के लिए यहां कई लंबे खंड पढ़ रहा हूँ। अध्याय 6, श्लोक 6 से 11.

चाची के पास जाओ, आलसी ! इसके तरीकों पर विचार करें और बुद्धिमान बनें। बिना किसी मुखिया या अधिकारी या शासक के, वह गर्मियों में अपना भोजन तैयार करती है और फसल में

अपना माल इकट्ठा करती है। हे आलसियों, तुम कब तक वहाँ पड़े रहोगे? आप नींद से कब उठेंगे? थोड़ी सी नींद, थोड़ी तंद्रा, आराम के लिए हाथ मोड़ना, और दरिद्रता एक डाकू की तरह और एक सशस्त्र योद्धा की तरह तुम पर आ पड़ेगी।

और हम यहां इसका हास्यप्रद, मजाकिया पक्ष देख सकते हैं। आलस्य का उपहास उड़ाया जा रहा है। अध्याय 24, श्लोक 30 से 34।

मैं एक आलसी मनुष्य के खेत और एक मूर्ख की दाख की बारी के पास से गुजरा, और क्या देखा कि सब कुछ कांटों से उग आया है। ज़मीन जालियों से ढँकी हुई थी और उसकी पत्थर की दीवार टूट गयी थी। फिर मैंने देखा और विचार किया।

मैंने देखा और निर्देश प्राप्त किया। थोड़ी सी नींद, थोड़ी तंद्रा, आराम के लिए हाथ मोड़ना, और दरिद्रता एक डाकू की तरह और एक सशस्त्र योद्धा की तरह तुम पर आ पड़ेगी। इसी तरह, अध्याय 10, श्लोक 4 से 5 में। सुस्त हाथ गरीबी का कारण बनता है, लेकिन मेहनती का हाथ अमीर बनाता है।

अध्याय 19, श्लोक 15. आलस्य गहरी नींद लाता है। आलसी व्यक्ति भूखा रहेगा।

मैंने पहले ही इस तथ्य का उल्लेख किया है कि आलस्य का अक्सर उपहास किया जाता है। अब मैं कई कहावतों और छंद देना चाहता हूँ जो इसे और भी स्पष्ट रूप से उजागर करते हैं। अध्याय 19, श्लोक 24.

आलसी व्यक्ति बर्तन में हाथ डाल देता है और वापस मुँह तक भी नहीं लाता। अध्याय 22, श्लोक 13. आलसी कहता है, बाहर सिंह है, मैं चौक में मारा जाऊंगा।

या अध्याय 26, श्लोक 13 से 16। आलसी व्यक्ति कहता है, सड़क में एक शेर है, सड़कों में एक शेर है। जैसे दरवाज़ा अपने कब्जे पर करवट लेता है, वैसे ही एक आलसी व्यक्ति बिस्तर पर करवट लेता है।

आलसी व्यक्ति बर्तन में हाथ डालता है और इतना थक जाता है कि उसे वापस मुँह तक नहीं ला पाता। आलसी व्यक्ति विवेकपूर्वक उत्तर देने वाले सात लोगों की तुलना में आत्म-सम्मान में अधिक बुद्धिमान होता है। फिर अंततः आलस्य परिवार को लज्जित करता है।

अध्याय 10, पद 5. जो बच्चा धूपकाल में बटोरता है, वह बुद्धिमान होता है, परन्तु जो बच्चा कटनी के समय सोता है, वह लज्जित होता है। इसके विपरीत, अब, मैं कुछ छंदों पर प्रकाश डालना चाहता हूँ और दिखाना चाहता हूँ कि सफलता की ओर, व्यापक अर्थों में समृद्धि की ओर ले जाने में परिश्रम कितना महत्वपूर्ण है। इनमें से कई मेहनती लोगों को ज्ञान, धार्मिकता और सामाजिक प्रतिष्ठा से जोड़ते हैं, जबकि उनकी तुलना मूर्ख लोगों से करते हैं और इससे भी दिलचस्प बात यह है कि दुष्ट लोगों और अपराधियों से।

इस बात सुनो। अध्याय 12, पद 11. जो अपनी भूमि पर खेती करते हैं, उनको तो बहुत भोजन मिलेगा, परन्तु जो निकम्मे कामों में लगे रहते हैं, वे निर्बुद्धि होते हैं।

13, पद 2. भले मनुष्य अपने वचनों के फल से अच्छी वस्तुएं खाते हैं, परन्तु विश्वासघाती की लालसा कुकर्म की होती है। अध्याय 12, पद 13. दुष्ट लोग अपने मुंह के अपराध के कारण फंस जाते हैं, परन्तु धर्मी संकट से बच जाते हैं।

आयत 14 के अनुसार, मुंह के फल से व्यक्ति अच्छी चीजों से भर जाता है, और शारीरिक श्रम का प्रतिफल मिलता है। अध्याय 12, श्लोक 24। मेहनती हाथ राज करेंगे, जबकि आलसी को बेगारी में लगाया जाएगा।

विडम्बना यह है कि जो मेहनती लोग कड़ी मेहनत करते हैं वे ही अंततः ऐसी स्थिति तक पहुंचते हैं जहां वे दूसरों पर शासन करते हैं जो उनके लिए काम करेंगे। इसका मतलब यह नहीं है कि वे अब काम नहीं करते हैं, लेकिन उनके लिए काम करने वाले अन्य लोगों के माध्यम से उनके पास आय का अधिशेष होगा। जबकि आलसी, जो पहले काम नहीं करना चाहते थे, काम करने के लिए मजबूर हैं क्योंकि उनके लिए कोई दूसरा रास्ता नहीं है।

अध्याय 13, श्लोक 4. आलसी की भूख लालसा करती है और उसे कुछ नहीं मिलता, जबकि मेहनती की भूख बहुतायत से पूरी होती है। 14, पद 23. सब परिश्रम से लाभ होता है, परन्तु व्यर्थ बातें करने से कंगालपन ही होता है।

20, श्लोक 13. नींद से प्रेम मत करो, नहीं तो तुम दरिद्र हो जाओगे। अपनी आँखें खोलो, और तुम्हें भरपूर रोटी मिलेगी।

20, पद 5. परिश्रमी की युक्तियां निश्चय ही बहुतायत की ओर ले जाती हैं, परन्तु जो कोई उतावली करता है, वह केवल हानि ही पूरी करता है। आप जल्दबाजी, अमीर-जल्दी अमीर बनने, समृद्धि पाने के आलसी तरीके के बीच इस संबंध को उन योजनाओं के माध्यम से देखते हैं जो ईमानदार और कड़ी मेहनत और काम और निवेश से बचने की कोशिश करते हैं, लेकिन इसे सस्ते में प्राप्त करने की कोशिश करते हैं। और ईमानदारी से कहूं तो, जितनी देर मैं इन सामग्रियों के साथ काम करूंगा, मैं उन लोगों को चुनौती देना चाहता हूँ जो समृद्धि के सुसमाचार मूल्यों का प्रचार करते हैं और जो उन्हें सुनते हैं।

यदि आप ईश्वर से सच्ची समृद्धि प्राप्त करना चाहते हैं, तो मेहनती, लगातार, ईमानदार काम के विकल्प के रूप में ईसाई मंत्रालयों को उदार दान का उपयोग न करें। निस्संदेह, ईसाई मंत्रालय को दान देने में कुछ भी गलत नहीं है। लेकिन क्या आपके पास देने के लिए कुछ है? या क्या आप अपनी जेब में इतना पैसा डाल रहे हैं कि आपके पास अपने और अपने परिवार के लिए जरूरत से भी कम बचा है, और फिर आप आधी उम्मीद कर रहे हैं कि भगवान किसी तरह आपको उदारतापूर्वक आशीर्वाद देंगे, जैसा कि आपसे वादा किया गया है, और यदि भगवान ऐसा नहीं करते हैं, आप सोचते हैं, जो कुछ मैंने बिना पुरस्कार के दिया है उसे वापस पाने के लिए मुझे एक और तरीका खोजने की जरूरत है।

इसलिए, मुझे लगता है, जैसा कि हम नीतिवचन की पुस्तक की व्यावहारिक सलाह को पढ़ना जारी रखते हैं, इससे हमें यह देखने में मदद मिल सकती है कि, हां, समृद्धि का सुसमाचार है, लेकिन शायद यह अमीरों के लिए बहुत अधिक है। अक्सर, हर युग में कई समाजों में अमीर उतने उदार नहीं होते जितने गरीब होते हैं। और शायद समृद्धि-प्रकार की शिक्षाओं और उपदेशों में इनमें से कई कहावतें विशेष रूप से धनी लोगों को संबोधित हैं।

और यहां मैं विशेष रूप से धनी ईसाइयों और यहूदियों से बात करना चाहता हूं। यदि ईश्वर ने आपको आपकी कड़ी मेहनत और उदारता के माध्यम से आशीर्वाद दिया है, और आप अपने लिए अच्छा कर रहे हैं, तो इसे अन्य लोगों के लिए और भी बेहतर करने, और अधिक उदार बनने की प्रेरणा के रूप में देखें। जैसा कि मैंने पहले ही उल्लेख किया है, मुझे लगता है कि यह व्याख्यान 2 या व्याख्यान 3 में था, जब हमने नीतिवचन 3, छंद 9-10 को देखा।

अब मैं थोड़ी देर के लिए परिश्रम और धार्मिकता के बीच संबंध के बारे में बात करना चाहता हूं, एक तरफ आलस्य और दुष्टता के विपरीत, दूसरी तरफ धन और उच्च सामाजिक प्रतिष्ठा की ओर ले जाता है, लेकिन असंतुष्ट समृद्धि, और कभी-कभी गरीबी और शर्मिंदगी, दूसरी ओर। अध्याय 10, श्लोक 20-22. धर्मी की जीभ तो उत्तम चान्दी है, और दुष्ट के मन का कोई मोल नहीं।

धर्मी के वचन बहुतों को भोजन देते हैं, परन्तु मूर्ख निर्बुद्धि के कारण मर जाते हैं। प्रभु का आशीर्वाद धनवान बनाता है, और उसे इससे कोई दुःख नहीं होता। अध्याय 12, श्लोक 27.

आलसी अपना खेल नहीं भुनाते, परन्तु परिश्रमी बहुमूल्य धन प्राप्त करते हैं। जो व्यक्ति काम में ढिलाई बरतता है, वह दुष्ट का सगा होता है। अध्याय 18, श्लोक 9. फिर अध्याय 21, श्लोक 25।

इसका संक्षेप में उल्लेख हम पहले ही कर चुके हैं। आलसी मनुष्य की लालसा घातक है, क्योंकि आलसी हाथ परिश्रम करने से इन्कार करते हैं। और फिर अगले दो श्लोक.

दुष्ट तो दिन भर लालच करते हैं, परन्तु धर्मी दान देने से पीछे नहीं हटते। दुष्टों का बलिदान घृणित है। बुरे इरादे से लाये जाने पर और कितना? इसका उल्लेख हम पहले ही कर चुके हैं।

और फिर अंततः, आलस्य न केवल स्वयं आलसी व्यक्ति को, बल्कि उनके नियोक्ताओं को भी कष्ट पहुँचाता है। अध्याय 10, पद 26। जैसे दाँतों में सिरका और आँखों में धुआँ होता है, वैसे ही आलसी अपने मालिकों के लिये होते हैं।

और मैं अन्य व्यावहारिक बिंदुओं को दिखाने के लिए त्वरित उत्तराधिकार में कई छंदों का उल्लेख करूंगा कि लोग सच्ची समृद्धि और धन कैसे प्राप्त कर सकते हैं। इनमें से एक है कर्तव्यनिष्ठा। अध्याय 16, श्लोक 20.

जो लोग किसी बात पर ध्यान देते हैं, वे सफल होते हैं, और जो लोग प्रभु पर भरोसा रखते हैं, वे धन्य हैं। अगला है चतुराई. अध्याय 20, श्लोक 14.

बुरा, बुरा, खरीदार कहता है। फिर चला जाता है और शेखी बघारता है, संभवतः उस चीज़ के बारे में जो उसने सस्ती कीमत पर खरीदी है। प्रेरणा।

16, 26. श्रमिकों की भूख, या उनकी भूख, उनके लिए काम करती है। उनकी भूख उन्हें उकसाती है।

ज़रूरत। ईश्वर का आशीर्वाद सफलता की ओर ले जाता है, लेकिन यह आमतौर पर सोचे जाने से कम प्रमुख है। अध्याय 16, श्लोक 3. अपना काम प्रभु को सौंप दो और तुम्हारी योजनाएँ स्थापित हो जाएँगी।

16, पद 7. जब लोगों के चालचलन से यहोवा प्रसन्न होता है, तो वह उनके शत्रुओं को भी अपने साथ मिला लेता है। वही अध्याय, श्लोक 20। जो लोग किसी विषय पर ध्यान देते हैं वे समृद्ध होंगे, और धन्य हैं वे जो प्रभु पर भरोसा रखते हैं।

मैंने पहले ही इसका उल्लेख किया है। फिर कुछ और व्यवहार जो अमीर बनने के लिए अनुशंसित नहीं हैं। इन्हीं में से एक है रिश्वत।

अध्याय 15, पद 27. जो अन्याय के लाभ का लोभी हैं, वे अपने घराने पर उपद्रव करते हैं, परन्तु जो घूस से घृणा करते हैं, वे जीवित रहेंगे। अथवा 17, 8. रिश्वत देने वालों की दृष्टि में रिश्वत जादुई पत्थर के समान है।

वे जिधर भी रुख करते हैं, वे सफल होते हैं। 17, पद 23. दुष्ट न्याय के मार्ग को बिगाड़ने के लिये गुप्त रिश्वत लेते हैं।

18, 16. एक उपहार दरवाजे खोलता है। यह महान तक पहुंच प्रदान करता है।

19, 6. बहुत से लोग दानी की कृपा चाहते हैं, और दान देनेवाले का हर कोई मित्र होता है। फिर कुछ और सकारात्मक. उचित निवेश.

14, श्लोक 4. जहाँ बैल नहीं, वहाँ अनाज नहीं। बैल के बल से प्रचुर फसल होती है। और इसी तर्ज पर कई अन्य श्लोक भी हैं।

फिर सही प्राथमिकताओं के बारे में. 24, 27. अपना काम बाहर तैयार करें।

क्षेत्र में अपने लिए सब कुछ तैयार रखें। और उसके बाद अपना घर बनायें. 27, 18.

जो कोई अंजीर के पेड़ की देखभाल करेगा वह उसका फल खाएगा। और जो कोई स्वामी की सेवा करेगा उसका आदर किया जाएगा। 27, श्लोक 23 से 27.

अपने झुण्ड की स्थिति अच्छी तरह जानो और अपने झुण्ड पर ध्यान दो। क्योंकि धन सदा के लिये नहीं रहता, और न राजमुकुट पीढ़ी पीढ़ी के लिये। जब घास सूख जाएगी, और नई घास उग

आएगी, और पहाड़ों की घास इकट्ठी हो जाएगी, तब भेड़ के बच्चे तुम्हें वस्त्र देंगे, और बकरियों से खेत का दाम मिलेगा।

बकरी का दूध तुम्हारे भोजन के लिये, तुम्हारे घराने के भोजन के लिये, और तुम्हारी दासियों के लिये पर्याप्त होगा। या 28, 19. जो कोई भूमि पर खेती करता है, उसे बहुत रोटी मिलेगी, परन्तु जो निकम्मे कामों में लगा रहता है, वह बहुत कंगाल हो जाएगा।

कौशल सफलता दिलाते हैं. क्या तुम उन लोगों को देखते हो जो अपने काम में कुशल हैं? वे राजाओं की सेवा करेंगे. वे आम लोगों की सेवा नहीं करेंगे.

विशेष रूप से बयानबाजी कौशल महत्वपूर्ण हैं। 18, 20 से 21. मुख के फल से पेट तृप्त होता है।

होठों की उपज संतुष्टि लाती है। जीभ के वश में मृत्यु और जीवन हैं, और जो उस से प्रेम रखता है वह उसका फल खाएगा। और कुशल जीभ और सुखद या सकारात्मक वाणी से संबंधित कई अन्य छंद हैं।

इसलिए, पिछले कुछ मिनटों में हमने वास्तव में इस बात पर ध्यान केंद्रित किया है कि किस प्रकार की व्यावहारिक चीजें हैं जो लोग खुद को सफलता, सामाजिक प्रतिष्ठा, भौतिक समृद्धि और सच्ची समृद्धि लाने के लिए कर सकते हैं। और मुझे लगता है कि यह वास्तव में इस पर प्रकाश डालने लायक है कि नीतिवचन की पुस्तक में इस पर बहुत सी सरल, व्यावहारिक, सीधी बुनियादी सामान्य ज्ञान प्रकार की सलाह है, लेकिन यह भी उजागर करना है कि इसमें से अधिकांश सही प्रकार के अधिक महत्वपूर्ण मूल्यों से जुड़ा हुआ है यह, एक उप-उत्पाद के रूप में, अक्सर भौतिक समृद्धि को बढ़ावा देगा, लेकिन इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि यह भगवान के साथ, धार्मिक दृष्टिकोण से, बल्कि पड़ोसियों, परिवार के सदस्यों के साथ भी अच्छे, समृद्ध, स्वस्थ, पुरस्कृत संबंधों को जन्म देगा। , और व्यापक समाज, जिसमें समाज के एक मूल्यवान सदस्य के रूप में पहचाने जाने के माध्यम से समुदाय में उच्च सामाजिक सम्मान का बिंदु शामिल है जो अपने चारों ओर के कल्याण में योगदान देता है। और इसलिए, नीतिवचन की पुस्तक चीजों की बड़ी योजना में धन और समृद्धि और भौतिक मूल्य पर चरित्र और सद्गुण को बढ़ावा दे रही है।

और यह अब हमें गरीबों और कमजोरों की देखभाल, गरीबी के बारे में बयानों और समाज में बेहतर स्थिति वाले लोगों को गरीबों के साथ कैसे बातचीत करनी चाहिए, इसके बारे में छंदों और छंदों के समूहों की एक और बहुत ही महत्वपूर्ण और महत्वपूर्ण श्रृंखला की ओर ले जाता है। ऐसे बयान आश्चर्यजनक रूप से लगातार और आश्चर्यजनक रूप से प्रमुख हैं। वे आश्चर्यजनक रूप से धार्मिक भी हैं।

तो सबसे पहले, कहावतों की एक श्रृंखला है जो दिखाती है कि लोग आम तौर पर गरीबों के साथ कैसे जुड़ते नहीं हैं, लेकिन यह भी उजागर करते हैं कि ऐसा जुड़ाव फायदेमंद, नैतिक और वांछनीय है। 14, पद 20, कंगाल को उसके पड़ोसी भी अप्रिय लगते हैं, परन्तु धनवान के बहुत मित्र होते हैं। पद 21, जो अपने पड़ोसियों को तुच्छ जानते हैं वे पापी हैं, परन्तु जो कंगालों पर दया करते हैं वे धन्य हैं।

17, 17, एक दोस्त हर समय प्यार करता है, और रिश्तेदार विपत्ति साझा करने के लिए पैदा होते हैं। 18, 24, कुछ दोस्त दोस्ती निभाते हैं, लेकिन एक सच्चा दोस्त अपने निकटतम रिश्तेदारों से भी अधिक करीब रहता है। 19, पद 4, धन बहुत से मित्र लाता है, परन्तु कंगाल मित्रहीन रह जाता है।

फिर भी इसे उसी अध्याय के श्लोक 6 के साथ जोड़िए। बहुत से लोग उदार लोगों की कृपा चाहते हैं, और उपहार देने वाले का हर कोई मित्र होता है। श्लोक 7, यदि गरीबों से उनके रिश्तेदार भी घृणा करते हैं, तो उनके मित्र भी उनसे कितना अधिक घृणा करते हैं? जब वे उन्हें पुकारते हैं तो वे वहां नहीं होते।

फिर कुछ कहावतें गरीबों की असुरक्षा और उनकी देखभाल के लिए संपन्न लोगों की सहवर्ती जिम्मेदारी को दर्शाती हैं, हालांकि उनके पास उन पर कोई शक्ति नहीं है। 18, 23, गरीब लोग गिड़गिड़ाते हैं, परन्तु अमीर मोटे तौर पर उत्तर देते हैं। 22, 16, स्वयं को समृद्ध करने के लिए गरीबों पर अत्याचार करना और अमीरों को दान देना केवल नुकसान ही पहुंचाएगा।

वैसे, यह कविता गरीबों के संरक्षण और दृष्टिकोण के ग्रीको-रोमन विचारों और उदाहरण के लिए, अमीरों के कराधान के संबंध में कई आधुनिक दृष्टिकोणों के सामने आती है। मैं विशेष रूप से यूनाइटेड किंगडम और संयुक्त राज्य अमेरिका में इसके बारे में जानता हूं, जहां, मैं आपको इसे फिर से पढ़ना चाहता हूं, खुद को समृद्ध करने के लिए गरीबों पर अत्याचार करना और अमीरों को दान देने से केवल नुकसान ही होगा। अमीरों के लिए कर कम करने का तर्क अक्सर दोहराया जाता रहा है और आम तौर पर यह ऐसे तर्कों से जुड़ा होता है जैसे अमीर दूसरे लोगों के लिए काम करते हैं।

मुझे लगता है कि यह बहुत सरल है और यह विशेष कहावत विशेष रूप से इस तरह के रवैये को संबोधित कर रही है, मुझे लगता है, जो निश्चित रूप से, वाणिज्यिक समाजों में हमेशा एक प्रमुख रवैया या तर्क रहा है। अध्याय 22, श्लोक 22 से 23, कंगालों को इसलिये मत लूटो क्योंकि वे कंगाल हैं, और न दीन लोगों को फाटक पर कुचलो, क्योंकि यहोवा उनका मुकद्दमा लड़ता है, और जो उन्हें उजाड़ते हैं, उनका प्राण भी उजाड़ देता है। अन्य कहावतें धर्मशास्त्र में गरीबों की देखभाल और गरीबों के लिए दैवीय प्राथमिकता को आधार बनाती हैं।

1431, जो कंगालों पर अन्धे करते हैं, वे अपने रचयिता का अपमान करते हैं, परन्तु जो दरिद्रों पर दया करते हैं, वे उसका आदर करते हैं। 1705, जो गरीबों का मज़ाक उड़ाते हैं वे अपने निर्माता का अपमान करते हैं। जो लोग विपत्ति में प्रसन्न होते हैं, वे दण्ड से बचे नहीं रहेंगे।

1917, जो गरीबों पर दया करता है वह प्रभु को कभी उधार नहीं देता और उसे पूरा बदला मिलेगा। यह फिर से उदार दान के बारे में है, लेकिन यह किसी संगठन को नहीं, बल्कि विशेष रूप से उन लोगों को उदार दान है जो समाज में जरूरतमंद हैं। मुझे लगता है कि एक ऐसा संगठन जो विशेष रूप से इसे लक्षित कर रहा है, बहुत अच्छा है।

मुझे लगता है कि अधिक समस्याग्रस्त वह है जहां हमारे पास एक ईसाई मंत्रालय है जो अपने शिक्षण के साथ-साथ उस मंत्रालय के प्रमुख लोगों को समृद्ध करना भी शामिल करता है। वह इस प्रकार की कहावत से ढका हुआ प्रतीत नहीं होता। 21 आयत 13, यदि तू कंगालों की दोहाई पर कान बन्द करे, तो दोहाई देगा, और सुना न जाएगा।

22 आयत 1, बड़े धन से अच्छा नाम प्रिय है, और सोने चान्दी से अनुग्रह उत्तम है। श्लोक 2, अमीर और गरीब में यह समानता है, भगवान उन सभी का निर्माता है। 22 श्लोक 9, जो लोग उदार हैं वे धन्य हैं क्योंकि वे अपनी रोटी गरीबों के साथ बाँटते हैं।

तो, यदि आप चाहें तो यह सर्वोत्तम समृद्धि का सुसमाचार है। हां, उदारतापूर्वक देने से ईश्वर का आशीर्वाद मिलता है, लेकिन नीतिवचनों में लगातार इस बात पर प्रकाश डाला गया है कि इसे उन लोगों को दिया जाए जिन्हें वास्तव में इसकी आवश्यकता है, इसे गरीबों को दिया जाए। और आओ इसकी तुलना अध्याय 28 आयत 27 से करें, जो कंगालों को दान देता है, उसे कुछ घटी न होती, परन्तु जो आंख फेर लेता है, वह बहुत शाप पाता है।

या 29.7, धर्मी गरीबों के अधिकारों को जानता है। दुष्टों को ऐसी कोई समझ नहीं होती। और इसकी तुलना 28.22 में इसके विपरीत से करें, कंजूस अमीर बनने की जल्दी में है और नहीं जानता कि नुकसान निश्चित है।

इसकी विडम्बना. कई अन्य कहावतों के अलावा, जिन पर प्रकाश डालने के लिए मेरे पास अब समय नहीं है, मैं उन कहावतों की एक पूरी श्रृंखला का उल्लेख करना चाहता हूँ जो गरीबों और कमजोरों के प्रति शक्तिशाली लोगों की जिम्मेदारियों का पता लगाती हैं। और यह कुछ ऐसा है जो मुझे लगता है कि आधुनिक दुनिया में सार्वजनिक क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रभाव वाले लोगों को विशेष रूप से संबोधित किया जाता है, चाहे वह मीडिया के माध्यम से हो, चाहे वह सामाजिक नेटवर्क के माध्यम से हो, चाहे वह महत्वपूर्ण वित्तीय कल्याण के माध्यम से हो, चाहे वह हो नागरिक नेतृत्व की भूमिकाओं के माध्यम से, या राजनीतिक शक्ति के माध्यम से जो लोगों के पास है, या चाहे इसका संबंध व्यापक समाज में बड़े प्रभाव वाले बड़े निगमों और व्यवसायों के प्रमुख पर उनकी स्थिति से हो।

मुझे लगता है कि जिन लोगों के समूहों का मैंने अभी उल्लेख किया है वे सभी उन कहावतों में शामिल हैं जिन्हें मैं अब सूचीबद्ध करने जा रहा हूँ। अध्याय 29, श्लोक 12 से 14. यदि कोई हाकिम झूठी बात सुने, तो उसके सब हाकिम दुष्ट होंगे।

गरीबों और उत्पीड़कों में यह समानता है। प्रभु दोनों की आँखों को ज्योति देते हैं। यदि कोई राजा गरीबों का न्याय न्याय से करेगा, तो उसका सिंहासन सदैव स्थिर रहेगा।

खैर, यहां आधुनिक राजनेताओं और शासकों के लिए सामाजिक जुड़ाव के लिए एक प्रोत्साहन है। अध्याय 30, श्लोक 13 से 15. ऐसे लोग हैं जिनकी आँखें कितनी ऊँची हैं, उनकी पलकें कितनी ऊँची हैं।

ऐसे लोग हैं जिनके दांत तलवार हैं, और जिनके दांत छुरियां हैं, कि पृथ्वी पर से कंगालोंको, और मनुष्योंमें से दरिद्रोंको निगल जाएं। जोंक की दो बेटियाँ हैं। दो, दो, वे चिल्लाते हैं।

अध्याय 31, श्लोक 4 निम्नलिखित। हे लमूएल, यह राजाओं के लिये नहीं है, कि वे दाखमधु न पियें, और न हाकिमों के लिथे तीव्र पेय की इच्छा करें, नहीं तो वे पीकर जो आज्ञा दी गई है उसे भूल जाएंगे, और सब दुखियोंके हक मार डालेंगे। उन लोगों के लिए बोलें जो सभी निराश्रितों के अधिकारों के लिए नहीं बोल सकते।

बोलें, सही तरीके से न्याय करें और गरीबों और जरूरतमंदों के अधिकारों की रक्षा करें। अब मेरे पास एक अनुभाग है जो देखने लायक होगा। जमानत और उधार देने या गिरवी रखने के इस व्याख्यान में हमारे पास ऐसा करने का समय नहीं है जिसे खतरनाक और आर्थिक रूप से विनाशकारी माना जाता है।

यहां का संबंध जोखिम भरे व्यावसायिक उपक्रमों से है, जिनमें उच्च-ब्याज दरें शामिल हैं, जो वास्तव में त्वरित, समृद्ध योजनाओं को जन्म दे सकती हैं और आधुनिक दुनिया में ऐसा हो रहा है, लेकिन जो ऐसा करने वाले लोगों के लिए संभावित रूप से विनाशकारी के रूप में देखे जाते हैं और नैतिक रूप से भी देखे जाते हैं।, गहराई से नैतिक रूप से त्रुटिपूर्ण। इनकी एक पूरी श्रृंखला है जिसके लिए मेरे पास समय नहीं है। उधार लेने और उधार देने पर कुछ श्लोक।

22.7, अमीर गरीबों पर शासन करता है और कर्ज लेने वाला ऋण देने वाले का गुलाम होता है। आधुनिक समाजों में यह कितना सच है? 28.8, जो अत्यधिक ब्याज से धन बढ़ाता है, वह उसे गरीबों के प्रति दयालु दूसरे व्यक्ति के लिए इकट्ठा करता है।

काश यह उतना ही सीधा सच होता जितना यहां बताया जा रहा है। फिर, मेरे पास यहां क्या हो रहा है इसके विवरण में जाने का समय नहीं है। मुझे लगता है कि लंबे समय में धार्मिक दृष्टिकोण से एक आदर्श बयान दिया जा रहा है।

लेकिन निश्चित रूप से, वास्तविक दुनिया में, अल्पावधि में, जो लोग अत्यधिक हितों से धन इकट्ठा करते हैं वे वास्तव में बहुत जल्दी अमीर बन जाते हैं और अन्य लोगों को गरीब बना देते हैं। अब मैं नीतिवचन की पुस्तक के समापन के निकट एक कथन के साथ अपनी बात समाप्त करना चाहता हूँ। नीतिवचन 30 में नीतिवचन के अंतिम अध्याय और संग्रह की पुस्तक के एक रहस्यमय तर्ककर्ता, एक विलक्षण लेखक-संग्राहक यह कहते हैं।

हे भगवान, मैं तुमसे दो चीजें मांगता हूँ। मेरे मरने से पहले मुझे उनसे इन्कार मत करना। झूठ और झूठ को मुझ से दूर करो।

मुझे न तो गरीबी दो और न ही अमीरी। मुझे वह भोजन खिलाओ जिसकी मुझे आवश्यकता है। या मैं तृप्त होकर तुम से इन्कार करके कहूंगा, प्रभु कौन है? ऐसा न हो कि मैं कंगाल हो जाऊं, और चोरी करके अपने परमेश्वर का नाम अपवित्र करूं।

इस प्रार्थना के बारे में एक सावधान यथार्थवाद है जो भौतिक सफलता और विफलता के प्रति मानवीय प्रतिक्रिया की परिपक्व समझ से प्रेरित है, जिससे भौतिक संपत्ति के प्रति रचनात्मक और बुद्धिमान दृष्टिकोण में गहरी मानवशास्त्रीय और धार्मिक अंतर्दृष्टि प्राप्त होती है। मेरा क्या मतलब है? मैं समृद्धि पर दो व्याख्यानों की शुरुआत में जो कह रहा था, उस पर वापस आना चाहता हूँ, अर्थात् नीतिवचन की पुस्तक स्वस्थ दृष्टिकोण, मूल्यों और सदाचार नैतिकता को बढ़ावा देती है जिससे हमें इस बात की उचित समझ प्राप्त करने में मदद मिलती है कि वास्तव में क्या महत्वपूर्ण है। ज़िंदगी। और अगुर, इस प्रार्थना में, यह मान रहे हैं कि गरीबी का महिमामंडन नहीं किया जाना चाहिए और इसे कम भी नहीं किया जाना चाहिए।

गरीबी कई लोगों के लिए एक गंभीर समस्या है। और जबकि कभी-कभी गरीबी लोगों की अपनी गलती होती है, हमने नीतिवचन की किताब में देखा है, और हम इसे दुनिया भर के इतिहास में जीवन में वास्तविकता में देखते हैं, गरीबी अक्सर अन्यायपूर्ण तरीकों से दूसरों पर थोपी जाती है। लेकिन यह गरीबी उन लोगों के बीच गंभीर रूप से धार्मिक और नैतिक संकट भी पैदा कर सकती है, जो अक्सर उनकी अपनी किसी गलती के कारण नहीं होते हैं।

लेकिन उनकी हताशा कभी-कभी उन्हें प्रलोभित कर सकती है और अक्सर उन्हें ऐसे कार्य करने के लिए प्रलोभित करती है जो परमेश्वर के समक्ष सही नहीं हैं। दूसरी ओर, विभिन्न कारणों से ऐसे लोग हैं, जो स्पष्ट रूप से समृद्ध हैं। कभी-कभी वे अपनी कड़ी मेहनत, अपने उत्कृष्ट कौशल और अपनी दृढ़ता के माध्यम से इसके हकदार होते हैं।

कभी-कभी उनके पास यह केवल भाग्य के कारण होता है, क्योंकि उनका जन्म सही समय पर सही जगह पर, सही प्रकार के परिवार में, समाज में सही सामाजिक स्तर पर हुआ है। चाहे वो कुछ भी हो। कभी-कभी वे अन्य लोगों को गरीब बनाकर अत्यधिक अमीर बन गए हैं।

कभी-कभी ऐसा लगता है कि यह पूरी तरह से यादृच्छिक है। लेकिन जो लोग अपनी वित्तीय स्थिति में सहज हैं उनके लिए यह सोचना कितना आसान है कि वे खुद पर भरोसा कर सकते हैं। उनकी संपत्ति उनकी कल्पना में मजबूत मीनार है।

अगुर गहराई से मानता है कि इस तरह की स्थिति उसके लिए खतरनाक हो सकती है, और निश्चित रूप से, यह हम सभी के लिए खतरनाक है, कि हम सोचते हैं क्योंकि हम आर्थिक रूप से सहज हैं कि हमें भगवान की आवश्यकता नहीं है। हो सकता है कि हम ईश्वर के विरोधी न हों, हम ईश्वर के प्रति एक प्रकार से उदासीन हैं, क्योंकि हमें ईश्वर की आवश्यकता नहीं है। और यहां मुझे लगता है कि नीतिवचन की किताब हममें से उन लोगों के लिए एक चुनौती पेश कर रही है जो बेहद गरीब हैं और हममें से जो बेहद अमीर हैं।

आपके जीवन में ईश्वर की क्या भूमिका है? क्या आपका धन सचमुच आपको संतुष्ट कर रहा है? क्या आपकी गरीबी आपको किनारा करने को उचित ठहराती है? या क्या ऐसा कुछ है जो जीवित ईश्वर आपके लिए और आपके साथ और आपके माध्यम से एक अमीर व्यक्ति के रूप में आपके जीवन को बेहतर बनाने और एक गरीब व्यक्ति के रूप में आपके जीवन को बेहतर बनाने के लिए कर सकता है? यह प्रार्थना हम सभी के लिए एक आदर्श प्रार्थना है, दोनों चरम पर, आर्थिक

और वित्तीय स्पेक्टम पर और बीच में कहीं भी, भगवान से हमें वह देने के लिए कहें जो हमें चाहिए और फिर हमें अधिक अधिशेष का उपयोग करने में मदद करें जो हमारे पास हो सकता है दूसरों का लाभ. मेरा मानना है कि यही समृद्धि का सच्चा सुसमाचार है जो आज हमारे लिए इज़राइल के ज्ञान की नीतिवचन की इस अविश्वसनीय पुस्तक से सामने आता है।

यह नीतिवचन की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. नट हेन हैं। यह सत्र संख्या 9, नीतिवचन में समृद्धि सुसमाचार, भाग 2 है।